कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर

कृषि पर्यवेक्षक भर्ती हेतु परीक्षा की योजना

परीक्षा की योजना :– कृषि पर्यवेक्षक की भर्ती हेतु एक लिखित परीक्षा आयोजित की जायेगी। बहुविकल्पीय प्रकार का एक वस्तुनिष्ठ प्रश्नपत्र होगा। प्रश्नपत्र में पाठ्यक्रम के तीन भागों के प्रश्न होंगे। प्रश्नपत्र का स्तर सीनियर सैकण्डरी स्तर का होगा। प्रश्नपत्र में प्रश्नों की संख्या 100 होगी तथा अधिकतम पूर्णांक 300 अंक होगा। सभी प्रश्न समान अंकों के होंगे। प्रश्नपत्र की अवधि 2 घंटे की होगी। प्रत्येक सही उत्तर के लिये 3 अंक प्रदान किये जायेंगे तथा प्रत्येक गलत उत्तर का 1 अंक काटा जायेगा। इस परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर अंतिम चयन हेतु मेरिट (वरीयता) तय की जायेगी। पाठ्यक्रम के प्रत्येक भाग से प्रश्नों की संख्या निम्न प्रकार होगी, किन्तु इनका क्रम में होना आवश्यक नहीं होगा।

प्रश्न पत्र का भाग	विषय का नाम	प्रश्नो की संख्या	कुल अंक
भाग–1	सामान्य हिन्दी	15	45
भाग–2	राजस्थान का सामान्य ज्ञान, इतिहास एवं संस्कृति	25	75
भाग–3	शस्य विज्ञान, उद्यानिकी व पशुपालन	60	180

कृषि पर्यवेक्षक की भर्ती हेतु परीक्षा का पाठ्यक्रम
(कुल पूर्णांक 300)

भाग – 1 (पूर्णांक 45)
प्रश्नो की संख्या – 15

सामान्य हिन्दी

1. दिये गये शब्दो की संधि एवं शब्दों का संधि–विच्छेद।
2. उपसर्ग एवं प्रत्यय – इनके संयोग से शब्द संरचना तथा शब्दों से उपसर्ग एवं प्रत्यय को पृथक करना, इनकी पहचान।
3. समस्त (सामासिक) पद की रचना करना, समस्त (सामासिक) पद का विग्रह करना।
4. शब्द युग्मों का अर्थ भेद।
5. पर्यायवाची शब्द और विलोम शब्द।
6. शब्द शुद्धि – दिये गये अशुद्ध शब्दों को शुद्ध लिखना।
7. वाक्य शुद्धि – वर्तनी संबंधी अशुद्धियों को छोड़कर वाक्य संबंधी अन्य व्याकरणिक अशुद्धियों का शुद्धिकरण।
8. वाक्यांश के लिये एक उपयुक्त शब्द।
9. पारिभाषिक शब्दावली – प्रशासन से संबंधित अंग्रेजी शब्दों के समक्ष हिन्दी शब्द।
10. मुहावरे – वाक्यों में केवल सार्थक प्रयोग अपेक्षित हैं।
11. लोकोक्ति – वाक्यों में केवल सार्थक प्रयोग अपेक्षित हैं।

भाग – 2 (पूर्णांक 75)
प्रश्नो की संख्या – 25

राजस्थान का सामान्य ज्ञान, इतिहास एवं संस्कृति

1. राजस्थान की भौगोलिक संरचना– भौगोलिक विभाजन, जलवायु, प्रमुख पर्वत, नदियां, मरूस्थल एवं फसलें ।
2. राजस्थान का इतिहास – सभ्यताऐं–कालीबंगा एवं आहड़

   प्रमुख व्यक्तित्व–महाराणा कुम्भा, महाराणा प्रताप, महाराणा सांगा, राव जोधा, राव मालदेव, महाराजा जसवंतसिंह, वीर दुर्गादास, जयपुर के महाराजा मानसिंह प्रथम, सवाई जयसिंह, बीकानेर के महाराजा गंगासिंह इत्यादि ।

   राजस्थान के प्रमुख साहित्यकार, लोक कलाकार, संगीतकार, गायक कलाकार, खेल एवं खिलाड़ी इत्यादि ।

3. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में राजस्थान का योगदान एवं राजस्थान का एकीकरण ।
4. विभिन्न राजस्थानी बोलियाँ, कृषि पशुपालन क्रियाओं की राजस्थानी शब्दावली ।
5. कृषि पशुपालन एवं व्यावसायिक शब्दावली ।
6. लोक देवी देवता – प्रमुख संत एवं संप्रदाय ।
7. प्रमुख लोक पर्व, त्योहार मेले, पशु मेले ।
8. राजस्थानी लोक कथा, लोकगीत एवं नृत्य, मुहावरें, कहावतें, फड़, लोक नाट्य, लोक वाद्य एवं कठपूतली कला ।
9. विभिन्न जातियाँ – जन जातियां ।
10. स्त्री –पुरूषों के वस्त्र एवं आभुषण ।
11. चित्रकारी एवं हस्त शिल्प कला – चित्रकला की विभिन्न शैलियां, भित्तिचित्र, प्रस्तरशिल्प, काष्ठकला, मृदभाण्ड (मिट्टी)कला, उस्ता कला, हस्त औजार, नमदे–गलीचे आदि ।
12. स्थापत्य–दुर्ग, महल, हवेलियां, छतरिया, बावड़ियां, तालाब, मंदिर–मस्जिद आदि।
13. संस्कार एवं रीति रिवाज।
14. धार्मिक, ऐतिहासिक एवं पर्यटन स्थल

2

भाग – 3 (पूर्णांक 180)
प्रश्नो की संख्या – 60

(1) शस्य विज्ञान

राजस्थान की भौगोलिक स्थिति, कृषि सांख्यिकी का सामान्य ज्ञान। राज्य में कृषि उद्यानिकी एवं पशुधन का परिदृश्य एवं महत्व । राजस्थान की कृषि एवं उद्यानिकी उत्पादन में मुख्य बाधाऐं। राजस्थान के जलवायुवीय खण्ड, मृदा उर्वरता एवं उत्पादकता । क्षारीय एवं उसर भूमियॉ, अम्लीय भूमि एवं इनका प्रबन्धन ।

राजस्थान में मृदाओं का प्रकार, मृदा क्षरण एवं मृदा संरक्षण के तरीके, पौधों के लिये आवश्यक पौषक तत्व उपलब्धता एवं स्त्रोत, राजस्थानी भाषा में परम्परागत शस्य क्रियाओं की शब्दावली । जीवांश खादों का महत्व, प्रकार एवं बनाने की विधियां तथा नत्रजन, फॉस्फोरस, पोटेशियम उर्वरक, एकल, मिश्रित एवं यौगिक उर्वरक एवं प्रयोग की विधियां । फसलोंत्पादन में सिंचाई का महत्व, सिंचाई के स्त्रोत, फसलों की जल मांग एवं प्रभावित करने वाले कारक । सिंचाई की विधियां– विशेषतः फव्वारा, बूंद–बूंद, रेनगन आदि । सिंचाई की आवश्यकता, समय एवं मात्रा । जल निकास एवं इसका महत्व, जल निकास की विधियां । राजस्थान के संदर्भ में परम्परागत–सिंचाई से संबंधित शब्दावली । मृदा परीक्षण एवं समस्याग्रस्त मृदाओं का सुधार। साईलेज, हे–मेकिंग।

खरपतवार – विशेषताऐं, वर्गीकरण, खरपतवारों से नुकसान, खरपतवार नियंत्रण की विधियॉ, राजस्थान की मुख्य फसलों में खरपतवारीनाशी रसायनों से खरपतवार नियंत्रण। खरपतवारों की राजस्थानी भाषा में शब्दावली।

निम्न मुख्य फसलों के लिये जलवायु, मृदा, खेत की तैयारी, किस्में, बीज उपचार, बीज दर, बुवाई समय, उर्वरक, सिंचाई, अंतरशस्य, पौध संरक्षण, कटाई–मढ़ाई, भण्डारण एवं फसल चक्र की जानकारी।

अनाज वाली फसलें – मक्का, ज्वार, बाजरा, धान, गेंहु एवं जौ।

दालें – मूंग, चंवला, मसूर, उड़द, मौठ, चना एवं मटर।

तिलहनी फसलें – मूंगफली, तिल, सोयाबीन, सरसो, अलसी, अरण्डी, सुरजमुखी एवं तारामीरा।

रेशेदार फसल– कपास।

चारे वाली फसलें – बरसीम, रिजका एवं जई।

मसाले वाली फसलें – सौंफ, मैथी, जीरा एवं धनियां।

नकदी फसलें – ग्वार एवं गन्ना ।

उत्तम बीज के गुण, बीज अंकुरण एवं इसको प्रभावित करने वाले कारक, बीज वर्गीकरण, मूल केन्द्रक बीज, प्रजनक बीज, आधार बीज एवं प्रमाणित बींज

शुष्क खेती – महत्व, शुष्क खेती की तकनिकी। मिश्रित फसल, इसके प्रकार एवं महत्व। फसल चक्र – महत्व एवं सिद्धांत। राजस्थान के संदर्भ में कृषि विभाग की महत्वपूर्ण योजनाओं की जानकारी। अनाज व बीज भण्डारण।

(2) उद्यानिकी

उद्यानिकी फलों एवं सब्जियों का महत्व, वर्तमान स्थिति एवं भविष्य। फलदार पौधों में नर्सरी प्रबंधन। पादप प्रवर्धन, पौध रोपण। फलोद्यान के स्थान का चुनाव एवं योजना। उद्यान लगाने की विभिन्न रेखांकन विधियां। पाला, लू एवं अफलन जैसी मौसम की विपरीत परिस्थितियॉ एवं इनका समाधान। फलोद्यान में विभिन्न पादप वृद्धि नियंत्रकों का प्रयोग। सब्जी उत्पादन की विधियां एवं सब्जी उत्पादन में नर्सरी प्रबंधन। राजस्थान में जलवायु, मृदा, उन्नत किस्में, प्रवर्धन विधियां, जीवांश खाद व उर्वरक, सिंचाई, कटाई उपज प्रमुख कीट एवं बीमारियां एवं इनका नियंत्रण सहित निम्न उद्यानिकी फसलों की जानकारी–आम,नीबूंवर्गीय फल, अमरूद, अनार, पपीता, बेर, खजूर, आंवला, अंगूर, लहसूवा, बील,टमाटर, प्याज,फुल गोभी, पत्तागोभी, भिण्डी, कद्दूवर्गीय सब्जियां, बैंगन, मिर्च, लहसून, मटर, गाजर, मूली, पालक। फल एवं सब्जी परीक्षण का महत्व, वर्तमान स्थिति एवं भविष्य, फल परीक्षण के सिद्धांत एवं विधियां। डिब्बाबंदी, सुखाना एवं निर्जलीकरण की तकनिक व राजस्थान में इनकी परम्परागत विधियां। फलपाक (जैम), अवलेह (जेली), केंडी, शर्बत, पानक (स्क्वैश) आदि को बनाने की विधियां।

औषधीय पौधें व फुलों की खेती का राजस्थान के संदर्भ में सामान्य ज्ञान। राजस्थान के संदर्भ में उद्यान विभाग की महत्वपूर्ण योजनाऐं।

(3) पशुपालन

पशुपालन का कृषि में महत्व। पशुधन का दुग्ध उत्पादन में महत्व एवं प्रबंधन। निम्न पशुधन नस्लों की विशेषताऐं, उपयोगिता व उत्पत्ति स्थान का सामान्य ज्ञान।

गाय–गीर, थारपारकर, नागौरी, राठी, जर्सी, होलिस्टन फ्रिजियन, मालवी, हरियाणा, मेवाती।

भैंस–मूर्रा, सूरती, नाला, रावी, पदावरी, जाफरवादी, मेहसाना।

बकरी– जमनापारी, बारबरी, बीटल, टोगनर्ब।

भेड़–मारवाड़ी, चोकला, मालपुरा, मेरीनो, कराकुल, जैसलमेरी,अविवस्त्र,अविकालीन।

ऊंट प्रबंधन, पशुओं की आयु गणना।

सामान्य पशु औषधियों के प्रकार, उपयोग, मात्रा एवं दवाईयां देने का तरीका।

जीवाणु रोधक–फिनाईल,कार्बोलिक एसिड, पोटेशियम परमेगनेट (लाल दवा), लाईसोल।

विरेचक–मेगनेशियम सल्फेट (मेकसल्फ), अरण्डी का तेल।

उत्तेजक–एल्कोहल, कपूर ।

कृमिनाशक–नीला थोथा, फिनोविस।

मृदन तेल – तारपीन का तेल।

राजस्थान के पशुओं की मुख्य बीमारियों के कारक, लक्षण तथा उपचार, पशु–प्लेग, खुरपका–मुँहपका, लंगड़ी, एंथ्रेक्स, गलघोटूं, थनेला रोग, दुग्ध बुखार, रानी खेत, मुर्गियों की चेचक, मुर्गियों की खूनी पेचिस। दुग्ध उत्पादन, दुग्ध एवं खीस संगटन, स्वच्छ दुग्ध उत्पादन, दुग्ध परीक्षण एवं गुणवता। दुग्ध में वसा को ज्ञात करना, आपेक्षित घनत्व, अम्लता तथा क्रीम पृथक्करण की विधि तथा यंत्रों की आवश्यकता एवं दही, पनीर एवं घी बनाने की विधि। दुग्धशाला में बर्तनों की सफाई एवं जीवाणुरहित करना। राजस्थान के संबंध में पशुपालन कियाओं एवं गतिविधियां से संबंधित प्रश्नावली।